[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3477

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सितार के प्रस्तुतिकरण में नवाचार का इतिहास (इटावा तथा मैहर घराने के विशेष संदर्भ में)

प्रो. हर्षवर्धन ठाकुर
सहा. प्रा. वाद्य संगीत
शास.महारानी लक्ष्मीबाई स्नात. कन्या महा.किला भवन,इन्दौर
प्रो. रुपश्री दुबे
सहा. प्रा. वाद्य संगीत
माता जीजा बाई शास.कन्या महामोती तबेला,इन्दौर

विभिन्न वैदिक कालीन संगीत ग्रंथों यथा ऋग्वेद, सामवेद, शाखायण ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि के अलावा रामायण, महाभारत से लेकर पुराण परंपरा तथा भरत के नाट्य शास्त्र एवं अभिनव भारती, संगीत रत्नाकर आदि समस्त ग्रंथों में तंत्री वाद्यों का वर्णन मिलता है। आगे चलकर संगीत दामोदर, आइने अकबरी, राग विबोध, संगीत पारिजात, राधागोविंद संगीत सार आदि, मध्यकालीन एवं 19वीं शती के ग्रंथों में भी चार प्रकार के वाद्यों का वर्णन मिलता है। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त ग्रंथों में वीणा का उल्लेख पाया जाता है जिससे यह कहा जा सकता है कि प्राचीनकाल से ही वीणा वाद्य का भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत वर्ष में मध्य युग तक गायन की संगति का प्रमाण संगीत रत्नाकर, चतुर्दण्डी प्रकाशिका, संगीत पारिजात आदि ग्रंथों में प्रस्तुत सामग्री के आधार पर स्पष्ट हो जाता है। कंठ का अनुगमन करने के बाद भी वाद्य वादन में अपना अलग स्वतंत्र अस्तित्व भी बनाये रखा है। यही कारण है कि 18वीं शताब्दी की विचित्र वीणा, रुद्र वीणा, सुर–बहार, सुरसिंगार, सितार आदि वाद्यों में स्वतंत्र वादन की प्रथा अपना आकार लेने लगी। आगे चलकर सभी वाद्यों को पछाड़ते हुए सितार ने एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया और एकल वादन में बजाए जाने वाले वाद्य के रूप में अपार प्रतिष्ठा अर्जित की। इन दो सौ वर्षों की यात्रा में सितार वाद्य का ना केवल प्राचीन स्वरूप ही बदला वरन उसकी वादन शैली में भी पर्याप्त रूप से परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं।

प्राचीन काल में संगीत के शिवमत, ब्रह्ममत तथा भरतमत जैसे विभिन्न सम्प्रदाय थे। ये वे घराने थे, जिनकी संगीत एवं नाट्य की अपनी विशिष्ट मान्यता थी। भरत, मतंग, अभिनवगुप्ताचार्य और शारंगदेव भरत संप्रदाय के अनुयायी हैं। ये सम्प्रदाय ही आगे जाकर देशकाल एवं परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होते गये, और उत्तर भारत में घराना शब्द की व्युत्पत्ति मध्यकाल में हो गई। जबकि दक्षिण में अभी भी सम्प्रदाय शब्द का प्रचलन है। साधारणतः वर्ग, सम्प्रदाय, परिवार, कुटुम्ब, वंश परम्परा, और घर आदि के सामूहिक अर्थ को घराना शब्द का पर्याय माना जाता है। संगीत के संदर्भ में कहा जा सकता है कि किसी एक प्रतिष्ठित संगीतज्ञ की निरंतर तपश्चर्या से से प्राप्त सांगीतिक विशेषताओं एवं परंपराओं का जब उसके पुत्र, शिष्यों, पौत्रों और प्रशिष्यों द्वारा निर्वहन किया जाता है तब कम से कम तीन पीढ़ी के बाद उसे एक घराना विशेष की संज्ञा प्राप्त होती है। सरल शब्दों में यह कहा जा सकता है कि घराना रीति अथवा शैली का नवचारात्मक इतिहास होता है।

यही रीति या शैली तंत्री वाद्य के स्वतंत्र वादन के विकास के साथ ही बाज शब्द के रूप में सामने आती है। सितार वादन के समस्त घराने और शैलियाँ कहीं न कहीं से संगीत सम्राट तानसेन की वंश परंपरा से अपने आपको जोड़ती हैं, जिसका कि ऐतिहासिक आधार भी प्राप्त होता है। सेनिया शब्द की उत्पत्ति संगीत सम्राट तानसेन के सेन शब्द से मानी जाती है। विमलकांत राय चौधरी ने व्यापक अर्थ में मियां तानसेन के वंशजों को सेनिया कहकर संबोधित किया है। भगवत शरण शर्माजी ने कहा है कि तानसेन घराने से संबंधित अन्य लोग सेनिये कहलाए। तानसेन के वंश में वीणा वादन की प्रधानता थी।

इसी वंश के रहीम सेन के पुत्र अमृत सेन से सितार वादन का प्रारंभ हुआ। वीणा के कठिन बाज की विशेषता से इसका नाम सेनिया बाज पड़ा। प्रो. बी.आर. देवधर के अनुसार तानसेन की गायन शैली सेनिया वाणी कहलाई।

प्रो. ललित किशोर ने माना कि तानसेन के बड़े पुत्र विलास खां से रबाबियों का तथा दूसरे पुत्र सूरत सेन से सितारियों का सेनिया बना। सम्राट अकबर के काल (1550 ई. से 1605 ई.) तक गोहर हारी व खण्डहार बानी के अतिरिक्त डागुर बानी और नौहार बानी का आंशिक सेनिया घराने के गायक वादक करने लगे एवं अकबर से लेकर मुहम्मद शाह तक सेनियों का दबदबा

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कायम रहा और न्यामत खां 'सदारंग' रंगीले के दरबार की प्रमुख कड़ी थे, कालांतर में सेनिया सितार वादकों के घराने कुछ इस प्रकार हुए।

1 रहीम सेन – अमृत सेन – जयपुर
2 गुलाम रजा खां – लखनउ
3 इनायत खां – गौरीपुर
4 अलाउद्दीन खां – मैहर
5 अब्दुलहलीम जाफर खां – इन्दौर

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ये समस्त घराने सेनिया घराने से सम्बद्ध है। ऐसा भी माना जाता है कि उत्तर भारत में सितार वादन के दो ही प्रमुख बाज व पूर्वी बाज के नाम से जाना जाता है। 18वीं शताब्दी तक सितार का वादन पूर्णतया वीणा का ही अनुसरण करता था। सेनिया घराने के कलाकारों ने वीणा की 12 क्रियाओं को सितार में अविकल रूप से अत्यंत परिश्रम एवं चिन्तन, मनन एवं अभ्यास के द्वारा इस प्रकार उतारा कि वे सितार वादन का अभिन्न अंग बन गई। जैसे, आलांप, जोड़, गत, तोड़ा, गुथाव, लड़ गुथाव, लड़ लपेट, कतर, तार–परन, झाला, ठोंक झाला इत्यादि।

जयपुर घराने की वादन शैली – तनसेन की पुत्री के वंश में वीणा वादन प्रबल व प्रधान था, इस वंश में रहीम सेन तथा उनके पुत्र अमृत सेन से सितार का श्री गणेश हुआ। रहीम सेन ने अपने बाज में वीणा एवं ध्रुपद के नियमों का पालन करते हुए सितार के आलाप पक्ष में ध्रुपद अंग का समावेश करते हुए सितार वादन को अत्यधिक रोचक बना दिया। ऐसा माना जाता है कि सितार की वादन शैली में ध्रुपद की चार बानियों जैसे गौहर बानी, डागुर, खंडहार और नौहर बानी का बहुत कुछ अनुकरण किया गया। रहीम सेन ने मिजराब का चमत्कारिक प्रयोग प्रारंभ किया तथा आलाप जोड़ बजाने के बाद गत वादन करना एवं गतकारी में गत का प्रदर्शन विभिन्न लयों में करना और गत के ही विभिन्न बोलों को अलग–अलग स्थानों से उठाकर सम पर लाना आपकी ही देन है। मतीसखानी गत के अन्य वादको में मसीतखां के पुत्र बहादुर खां, नन्हे खां, गुलाब हुसैन खां, मुगलू खां, बुलाकी खां आदि के नाम प्रमुख है। मसीत खानी बाज के अलावा पूर्वी बाज का प्रचलन मसीत खां के शिष्य गुलाम खां के द्वारा प्रारंभ किया गया ठुमरी, ख्याल व तराना पर प्रभावित इस बाज में मध्यलय व द्रुत लय की प्रधानता और गतकारी में बोलों को अधिक महत्व दिया गया। यह रजाखानी गत वादन शैली लखनऊ, फैजाबाद, जौनपुर, इटावा, काशी आदि स्थानों पर बहुत लोकप्रिय हुई। रजाखानी गत की अधिकांश रचनाएँ पीलू, काफी, खमाज, गारा, भैरवी, जयजयवंती, तिलक कामोद आदि रागों पर निर्मित की गई।इस प्रकार सितार वादन में मसीतखानी एवं रजाखानी बाज प्रमुख रुप से उभर कर सामने आ गये।

19वीं शताब्दी के आरंभ तक मसीतखानी गत में 11वीं मात्रा का फिकरा बजाकर 12वीं मात्रा से पुनः गत प्रारंभ करना तथा गत के मुखड़े को विभिन्न लयों में बजाकर सम पर आने की प्रथा थी। आठ मात्रा से लेकर 16 मात्रा तक के तोड़े भी बजाए जाने लगे और ख्याल गायकी के प्रभाव के कारण स्थाई और अंतरे को ख्याल की ही भांति छोटे–छोटे टुकड़े बजाकर बरता जाने लगा।

इन्हीं प्रभावों एवं परिवर्तनों के कारण माना जाता है कि सितार वादन में विभिन्न शैलियों का विकास हुआ। इसी सैनिया घराने में पखावज के चपल गति के बोलों पर आधारित फिरोजखानी गत के आविष्कार फिरोज खॉ हुए जो खुसरो खॉ के पुत्र तथा सदारंग के भतीजे दामाद थे। रहीम सेन के पुत्र अमृत सेन ने भी सितार वादन में गत, तोड़े ,बोल, बांट इत्यादि का उत्कृष्ट समावेश किया।

सेनिया घराने के प्रख्यात अन्य कलाकारों में अमीर खां, बहादुर खां, हुसैन खां, निहाल सेन, बरकतउल्ला खां, आशिकअली खां, मुश्ताक अली खां आदि हुए।

इटावा घराना – एक किवदंती के अनुसार इटावा घराने के आदि पुरुष सरोजनसिंह को माना गया है। जिनके पुत्र तुरब खां एक प्रसिद्व संगीतज्ञ थे। तुरब खां के पुत्र साहिब दाद खां इटावा घराने के प्रतिनिधि कलाकार थे। साहिब दाद के पुत्र इमदाद खां हुए। जिन्होने अपने अथक परिश्रम, गहरी निष्ठा और जटिल तकनीको का प्रयोग कर कला एवं वाद्य दोनों को उसके चरम तक पहुचायाँ। इन्हीं से इमदाद खानी बाज का प्रारंभ हुआ। इमदाद खां को दो पुत्र हुए प्रथम इनायत खां द्वितीय वहीद खां 1865 ई. में इटावा की सरजमीं पर जन्में। उस्ताद इनायत खां ने अपने पिता के समान ही तकनीक व वाद्यों में

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

बहुत सारे परिर्वतन किये। वादन के कलात्मक व सौंदर्यात्मक पक्ष की अभिवृद्वि के लिये खां साहब ने परम्परागत शैली में परिवर्तन के दृष्टिकोण का विकास किया। गायन शैली से गत तोड़े का वादन और जटिल छंद युक्त तिहाईयों के साथ–साथ खण्डार वाणी तथा गमक का उनका कार्य कालान्तर में उनके घराने की विशिष्टता के रुप मे उभर कर सामने आया। गत तोड़े झाले के साथ–साथ क्रमशः सात बार 'धा' दिखाकर गत की समाप्ति आपकी विशेषता थी। इमदाद खां के द्वितीय पुत्र वाहिद खां का भी सुरबहार व सितार पर समान रुप से अधिकार था। आपके आलाप का ढंग ठुमरी के अंग से प्रभावित था।

वहीद खां साहेब के पुत्रों में अजीज खां व हाफिज खां हुए। अजीज खां के पुत्र शाहिद परवेज आज विश्व विख्यात एवं स्वनाम धन्य सितारवादक के रूप में प्रतिष्ठित हैं जो इमदाद खानी बाज के उज्जवल रत्न स्वरूप में प्रतिष्ठित है।

इनायत खां की वंश परंपरा में उस्ताद विलायत खां का नाम अग्रगण्य है व आज भारत वर्ष के लगभग सभी प्रतिष्ठित कलाकार कहीं न कहीं से आपकी वादन शैली का अनुगमन करते हैं। गायकी अंग को सितार मे सम्पूर्णतः आत्मसात करने के प्रयास के मद्देनजर आपने वाद्य की बनावट में भी निरंतर चिंतन मनन व शोध किए। जटिल, मुर्की, गमक, पांच या साढ़े पांच स्वर की मींड, सपाट तानें, छूट की ताने, स्वर की निरंतरता गोल जवारी द्वारा जर्मन सिल्वर के परदे, छः मुख्य तारों का प्रयोग आदि कार्यों ने आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अमर कर दिया।

खां साहब की प्रस्तुति विधान की इस नई धारा ने सम्पूर्ण संगीत को एक अलौकिक आनंद में डुबोने का कार्य किया। उस्ताद विलायत खां की इमदाद खानी बाज से गौरीपुर घराने तक की इस महायात्रा में विगत 6 पीढ़ियों से प्राप्त ज्ञान को संरक्षित रखते हुए उस्ताद विलायत खां ने घोर परिश्रम व तपश्चर्या से अपार यश व कीर्ति प्राप्त की।

मैहर घराना – रबाब शैली से अनुप्राणित लगभग बाईस सौ वर्ष पुराने शारदीय वीणा से विकसित हुए सरोद वाद्य के विश्व प्रसिद्ध वादक मैहर के बाबा अलाउद्दीन खां साहब हैं, जिन्होंने अहमद अली जयपुर और वजीर खां रामपुर से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। आपने जीवन काल में अनेक उस्तादों से भिन्न–भिन्न वाद्व यंत्रों की शिक्षा लेने के कारण बाबा ने सभी वाद्यों की विशेषताओं को सरोद वाद्य के वादन शैली में प्रस्तुत करने का अभूतपूर्व कार्य किया। लगभग 18 वाद्य यंत्रों के वादन तकनीक से आप परिचित थे और वीणा वादन की पूर्ण तकनीक का भी आपको ज्ञान था। बाबा ने सर्वप्रथम सरोद में दारा, दा, रा, बोल प्रयुक्त करते हुए जमजमें व कृन्तन आदि बारीकियों को भी सरोद में समान अधिकार से प्रस्तुत किए। सरोद वादन की पारंपरिक शैली को अलाउद्दीन खां ने एक क्रमबद्ध स्वरूप प्रदान किया। और पं. रविशंकर के अनुसार बाबा के संगीत के असीम ज्ञान के कारण उनकी एक अलग शैली बन गई प्रयोग धर्मी कलाकार होने के साथ–साथ बाबा ने संगीत निर्देशक के रुप में अपार ख्याति अर्जित की और मैहर बैंड की स्थापना करके अनेक नवीन वाद्यो को निर्माण भी किये। माना जाता है कि वायलिन को भी भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रतिष्ठत करने वाले बाबा अलाउद्दीन ही थे। बाबा के प्रमुख शिष्यो में भारत रत्न पंडित रविशंकर, अन्नपूर्णा देवी अली अकबर खां, निखिल बेनेर्जी, पन्नालाल घोष, शरण रानी, ज्योतिन भट्टाचार्य आदि विशेष रुप से उल्लेखनीय नाम है। मैहर घराने के अद्वितीय सरोद वादक वादक एवं आपके पुत्र अली अकबर खां साहब बाबा की परम्परागत शिक्षा पद्वति के आधार पर रागो के सुरीला पन और स्वरो की स्पष्टता तथा लयकारी का प्रयोग करते हुए प्रस्तुतीकरण देते है। भारत रत्न की सर्वाच्च उपाधि से अभिभुत पं.रविशकंर आपके ही शिष्य है। पं. रविशंकर की वादन शैली मे बाबा से प्राप्त ज्ञान के अतिरिक्त स्वयं की मौलिक सूझबूझ एवं कल्पना का पर्याप्त स्थान है। बीन के किलिष्ट अंगों,जटिल लयकारियों का प्रयोग, लयदार तोड़ो क्लिष्ट तानो तथा लयकारी के काम पंडितजी की अपनी विशेषता है।

मैहर घराने के वादन शैली मे धुवपद एवं बीन दोनो अंगो का मिश्रण मिलता है। साथ ही साथ कण, खटका, मुर्की, जमजमा के प्रयोग के अलावा मन्द्र एवं अतिमंद्र स्वरो में अलाप चारी प्रस्तुतीकरण को एक विशिष्ट स्वरुप प्रदान करती है।

सारांशतः कहा जा सकता है कि वादन के प्रतिष्ठित कलाकारों की वादन प्रस्तुति में सेनिया घराने का प्रभाव पीढ़ी गत ज्ञान को संरक्षित रखने पल्लवित करने तथा विकसित करने की अटूट निष्ठा का परिणाम है।